Bhajan

18

भजन - संत कबीर दास/पारम्परिक

सांई बिनु दरद करेजे होय |

दिन नहिं चैन, रैन नहिं निंदिया ,
कासे कहूँ दुख होय,
दरद करेजे होय ||
सांई बिनु ~~~

आधी रतियां, पिछले पहरवा,
तरस तरस रही सोय,
कहत कबीर सुनो भई साधो,
सांई मिले सुख होय,
दरद करेजे होय ||
सांई बिनु ~~~

गगन मंडल में सेज तुम्हारी,
हम हैं साधारण संसारी,
किस विधि मिलना होय,
दरद करेजे होय ||
सांई बिनु ~~~

स्वरकार - गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव

'राम चिरैया'

[एक पारम्परिक रचना पर आधारित नया भजन]

बोले बोले रे राम चिरैया ।
मेरे साँसों के पिंजरे में घड़ी घड़ी बोले ,
बोले बोले रे राम चिरैया ||

ना कोई खिड़की, ना कोई डोरी ,
कैसे चोर करेगा चोरी ?
जब राम मेरा रखवैया रे |
बोले बोले रे राम चिरैया ||

किसकी नैया ? कौन खिवैया ?
कौन करे इसकी रखवैया ?

जब तेज चले पुरवैया रे |
बोले बोले रे राम चिरैया ||

रामजी की नैया, रामजी खिवैया,
रामजी करें उसकी रखवैया ,
भज ले मन राम रमैया रे |
बोले बोले रे राम चिरैया ||
मेरे साँसों के पिंजरे में घड़ी घड़ी बोले ,
बोले बोले रे राम चिरैया ||

शब्दकार - स्वरकार - गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव

भजन - "राम शरण चलिये"

[राग कलावती पर आधारित]

चलिये चलिये चलिये श्री राम शरण चलिये |
साधक जन श्रद्धा भक्ति से गुरु चरन कमल धरिये ||
चलिये चलिये ~~~

सत्गुरु सच्चा पथ जाने हैं ,
वह राम धाम पहिचाने हैं |
अब नहीं भटकिये साधकजन गुरु की अंगुली धरिये |
चलिये चलिये चलिये श्री राम शरण चलिये ||

दुरलभ भी सुलभ बनायेंगें,
मन वांछित फल दिलवायेंगें,
यदि श्रद्धा से हम प्रेम सहित गुरुमंत्र सदा ही गायेंगें |
चलिये चलिये चलिये श्री राम शरण चलिये ||

तू समझ ना पायेगा कैसे,
कट जायेगा तेरा जीवन,
पीड़ायें सब धुल जायेंगी,
बरसेगा जब रामामृत धन ||
चलिये चलिये चलिये श्री राम शरण चलिये |
साधक जन श्रद्धा भक्ति से गुरु चरन कमल धरिये ||

शब्दकार - स्वरकार
- व्ही एन श्रीवास्तव
गायन - आलोक सहदेव

भजन - "गुरु प्रीति "

[राग चारुकेशी पर आधारित]

दोहा:
गुरुजन देव समान हैं सतगुरु हैं प्रभु रूप |
गुरु-मूरत में देखिये साधक राम स्वरूप ||

दरशन दो गुरु प्रान पियारे
अब तुम बिन नहि रहा जाय रे ||

भ्रम भूलों से घिरा हुआ हूँ,
अंध कूप में गिरा हुआ हूँ |
मोह जाल में फंसा हुआ हूँ ,
तुम बिनु मोहे कौन उबारे ||
दरशन दो ~~~

चलती बेला दरस किया था,
गुरुवर ने संदेश दिया था |
जीवन के दिन गिने चुने हैं ,
प्रभु को नहीं भुलाना प्यारे ||
दरशन दो ~~~

बाकी कितना भोग अभी है ,
सतगुरु तुमको ज्ञात सभी है ,
जिस पर तेरी कृपा दृष्टि है,
उसको फिर क्यूं हो चिंता रे ||
दरशन दो ~~~

शब्दकार - स्वरकार - गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव

'जंगल में राम धुन' - भजन

[राग केदार पर आधारित]

हमसे भली जंगल की चिड़ियाँ
जब बोलें तब रामहि राम ||

ब्रह्म मुहूरत उठ कर पंछी प्रभु का ध्यान लगाते हैं ,
चहक चहक मधुमय रामामृत जंगल में बरसाते हैं ||
पर हम अहंकार में डूबे अपने ही गुन गाते हैं ,
गुरु जन के आदेश भूल हम जीवन व्यर्थ गंवाते हैं ||
हमसे भली जंगल की चिड़ियाँ
जब बोलें तब रामहि राम ||

कितने भाग्यवान हैं हम सब ऐसा सतगुर पाया है ,
जिसने हमको "राम" नाम का सहज योग सिखलाया है |
माया जंजालों में फँस कर हमने उसे भुलाया है ,
पर चिड़ियों ने राम मंत्र जीवन भर को अपनाया है ||
हमसे भली जंगल की चिड़ियाँ
जब बोलें तब रामहि राम ||

शब्दकार - स्वरकार - गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव

भजन - "अंतिम प्रार्थना"
[राग भैरवी पर आधारित]

हे दुखभंजन रघुनाथ हरो दुख मेरे, अपना लो दीनानाथ दास हम तेरे |

युगों युगों से सुनते आये, तुम सबके दुख हरते ,
सभी निराश जनों की झोली, तुम आशा से भरते |
गुरु, पितु मातु, सहायक सबके, सबका हित ही करते,
हम भी झोली ले हाथ, लगाये आस, खड़े दर तेरे ||
हे दुखभंजन ~~~

लाखों योनि भटक कर हमने ये मानव तन पाया ,
यह दुरलभ जीवन भी प्रभुजी मैंने व्यर्थ गँवाया ,
कभी न आया संत शरन में, कभी न हरि गुन गाया,
अब कैसे हो उद्धार, लगें हम पार, न समुझ परे रे ||
हे दुख भंजन ~~~

गीध अजामिल गज गणिका को तुमने पार लगाया,
पत्थर बनी अहिल्या को तुमने ही राम जिलाया ,
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण को तुमने निज धाम पठाया,
हम भी तो दीनानाथ, तुम्हारे दास, चरन के चेरे ||
हे दुख भंजन ~~~

हमें पता है, इक दिन तुम मेरी भी अरज सुनोगे,
निज चरणों पर, यह पापी सिर, प्रभु तुम रखने दोगे,
अहंकार मेटोगे, मेरे अवगुण सभी हरोगे ,
काटोगे माया जाल, प्रभु, तत्काल रखोगे नेरे ||
हे दुख भंजन ~~~

शब्दकार - स्वरकार – गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव

भजन - "गुरु दरशन"

[राग भैरवी पर आधारित]

गुरु दरशन बिनु हमें न जीना,
उन बिन और भाय कुछ भी ना ||
गुरु दरशन ~~~

दिवस न भूख, नींद नहिं रैना,
निकसत नाहीं मुख सों बैना,
बिरहा नल जर जर तन कीना ||
गुरु दरशन ~~~

निज घर छोड़ बहुत दिन भटका,
हा दर पर जा कर सिर पटका,
तुमसा सांई कहीं मिला ना ||
गुरु दरशन ~~~

बिनु हरि कृपा कठिन है पाना,
ऐसा गुरु जो हरे अज्ञाना ,
नाम करावे मन आसीना ||
गुरु दरशन ~~~

शब्दकार - स्वरकार - गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव

भजन - "गोपिका विनय"

[राग भूपाली पर आधारित]

श्याम हमें बांसुरी बनाओ

सघन कटीले बाँस बनों से,
काट हमें निज आंगन लाओ,
कटि बांधौ अपने संग राखो,
शपथ लली की जिन बिलगाओ ||
श्याम हमें बांसुरी ~~~

काटो, छांटो, दागो जी भर,
छेद करो जितने भी चाहो,
छलनी भलै करो तन मेरा,
पर मेरे मन से मत जाओ ||
श्याम हमें बांसुरी ~~~

मल, विक्षेप, आवरण हर कर,
मेरा अंतर शून्य बनाओ,
कर दो मन निष्काम हमारा,
भक्ति सुरस इसमें सरसाओ ||
श्याम हमें बांसुरी ~~~

शब्दकार - स्वरकार - गायक
- व्ही एन श्रीवास्तव